ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 30 कुल पृष्ठ-8 26 जनवरी से 1 फरवरी, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 मा. कृ.-06

22 जनवरी, 2023 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में हरियाणा प्रान्त के वरिष्ठ आर्य कार्यकर्ताओं की महत्त्वपूर्ण बैठक सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती के अवसर पर हरियाणा प्रान्त में आयोजित होंगे बड़े कार्यक्रम

- स्वामी आर्यवेश

रोहतक में महिला सम्मेलन तथा जीन्द में आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जायेगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के ऊर्जावान यशस्वी नेता स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में हरियाणा प्रांत के सैकड़ों वरिष्ठ आर्य कार्यकर्ताओं की बैठक स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में दिनांक 22 जनवरी, 2023 को आयोजित की गई।

इस अवसर पर बैठक की अध्यक्षता कर रहे यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि हम केंद्र सरकार तथा प्रांतीय सरकारों से अपील करते हैं कि वे स्वामी दयानन्द जी के 200वीं जन्म जयन्ती को सरकारी कार्यक्रम का हिस्सा बनाकर स्वामी दयानन्द जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रचारित-प्रसारित करने का कार्य करें। वहीं उन्होंने कार्यकर्ताओं में जोश भरते हुए कहा कि हम सबको सरकारों के भरोसे पर नहीं रहना चाहिए बल्कि आर्य समाज का इतना बड़ा संगठन है और हम सबको अपने-अपने स्तर से स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती को मनाने का निर्णय करना चाहिए और देश के कोने-कोने में स्वामी दयानन्द जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को प्रचारित-प्रसारित करने का कार्यक्रम बनाना चाहिए।

स्वामी आर्यवेश जी ने आगामी कार्यक्रमों की घोषणा करते हुए बताया कि आर्य समाज द्वारा 200 विषयों पर लाखों की संख्या में ट्रैक्ट छापे जाएंगे। आर्य समाज का देश की आजादी में योगदान विषय पर 200 संगोष्ठी आयोजित की जायेंगी। 200 नई आर्य समाजों का गठन, 200 युवा निर्माण शिविरों का आयोजन, 200 संगोष्ठियों का आयोजन, 200 स्कूलों में भाषण प्रतियोगिता, 200 वानप्रस्थ तथा संन्यास की दीक्षा तथा प्रत्येक जिले में आर्य सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे।

इस महत्त्वपूर्ण बैठक में यह निर्णय लिया गया कि 1 से 12 मार्च, 2023 की तिथियों में स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में 'स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर संगोष्ठी' का कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा।

12 जून, 2023 को रोहतक में महिला सम्मेलन आयोजित किया जायेगा तथा 22 सितम्बर, 2023 को जीन्द में आर्य महासम्मेलन आयोजित करके स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर विस्तार से चर्चा होगी।

इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी ने बताया कि 26, 27 व 28 मई, 2023 की तिथियो में जोधपुर में अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में आयोजित होगा जिसमें हरियाणा से सैकड़ों आर्य कार्यकर्ता तथा आर्यजन जोधपुर (राजस्थान) पहुंचेंगे।

इस एक दिवसीय बैठक में 51 सदस्यीय समिति का गठन किया गया। द्वि शताब्दी आयोजन समिति का अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी तथा संयोजक स्वामी आदित्यवेश जी को बनाया गया।

संगोष्ठी आयोजन समिति के संयोजक डॉ. जयवीर मलिक, महिला सम्मेलन आयोजक बहन प्रवेश आर्या, भाषण प्रतियोगिता के संयोजक श्री हरपाल आर्य, युवा शिविर संयोजक श्री सज्जन राठी के अतिरिक्त आचार्य हरिदत्त, श्री बिरजानंद एडवोकेट, श्री आजाद सिंह (सोनीपत), बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, श्री रामपाल शास्त्री, पूर्व विधायक श्री अजीत सिंह (झज्जर), स्वामी नित्यानन्द (गुरुग्राम), श्री अशोक (जींद), श्री वेद प्रकाश (रोहतक), श्री महावीर शास्त्री, श्री सत्यवीर, डॉ. होशियार सिंह (कैथल), दादरी से श्री हरपाल, हिसार से श्री दलबीर आर्य, सिरसा से श्री इंद्रपाल, श्री सुमित सरपंच (मकडौली), श्री जयवीर (गुरुग्राम) आदि ने अपने सुझाव दिए।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

28 जनवरी जयन्ती पर विशेष

राष्ट्रीय आन्दोलन में लाला लाजपतराय की भूमिका

– मनोहर पुरी

'भारत की आजादी में स्वराज' के मंत्र को जन-जन तक पहुँचाने के लिए उसे व्यावहारिक रूप देकर राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जोड़ने का श्रेय शेरे पंजाब लाला लाजपत राय को है। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय (28 जनवरी 1865 - 17 नवम्बर 1928) आधुनिक भारतीय राजनीति में एक विचारक, समाज सुधारक, पत्रकार और महानूस्वतंत्रता सेनानी केरूप में प्रतिष्ठित हैं। लाला जी ऐसे विचारक थे जिनकी दृष्टि भविष्य में आने वाले परिवर्तनों को स्पष्ट देख रही थी। इसीलिए उन्होंने भारत के प्राचीन गौरव की चेतना को जगाने केसाथ-साथ देश को आधुनिकता की ओर चलने के लिए प्रेरित किया। वह बहुत पक्के राष्ट्रवादी थे। वह मानते थे किअपने-अपने आदर्श निर्धारित करने और उन्हें कार्यान्वित करने का मूल अधिकार प्रत्येक राष्ट्र को है। उनके अनुसार 'स्वराज' राष्ट्र की आत्मा है। स्वराज्य छिन जाने पर कोई भी राष्ट्र ''मूक पशुओं का झुंड मात्र रहा जाता है, उसे जिधर हांक दो, उधर ही चल देता है।''

लाला जी मानते थे कि किसी राष्ट्र की स्वतन्त्रता में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जाना चाहिए। यह नितान्त अस्वाभाविक और अनुचित है। जैसे किसी धर्म के अनुयायियों को दूसरे के धर्म में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है वैसे ही किसी भी राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के मामलों में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। साईमन कमीशन के भारत आगमन का विरोध करते समय उन्होंने अपनी इस बात को जोरदार ढंग से जनता के सामने रखा। उन्होंने कहा कि मैं किसी भी विदेशी को भारत की समस्याओं के समाधान के योग्य नहीं मानता क्योंकि कोई भी कमीशन जातियों की स्वराज पाने की योग्यता निश्चित करने की क्षमता नहीं रख सकता। उनके विचार में कोई राष्ट्र इतना गया-बीता नहीं होता कि उस पर किसी दूसरे राष्ट्र के आधिपत्य को उचित ठहराया जा सके, चाहे दूसरा राष्ट्र कितना ही महान क्यों न हो। फिर भारत तो स्वयं एक महान राष्ट्र है, उस पर विदेशी शासन का क्या औचित्य है?

वस्तुतः प्रत्येक राष्ट्र को स्वतन्त्र रूप से सुदृढ़ और स्वाधीन राजनीतिक जीवन जीने का पूरा अधिकार है। शासितों की सहमति ही किसी सरकार का एकमात्र तर्कसंगत और वैध आधार है। उनकी इन बातों से महाराष्ट्र के बाल गंगाधर तिलक और बंगाल के विपिन चन्द्र पाल भी पूरी तरह से सहमत थे। स्वतंत्रता के संग्राम में अपनी एक जैसी विचारधारा के कारण इन्हें इतिहास में लाल बाल पाल के रूप में याद किया जाता है। भले ही इन तीनों विचारकों केविचार उस समय के नरमपंथी नेताओं को पसंद नहीं थे परन्तु यह सत्य है कि इन्होंने स्वतंत्रता का लक्ष्य पाने के लिए एक निश्चित मार्ग का चुनाव कर दिया था।

लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी 1865 को पंजाब के लुधियाना जिले के एक गांव में हुआ।उनके पिता का नाम लाला राधाकृष्ण था। लाला लाजपत राय का यह दृढ़ विश्वास था कि अंग्रेजों ने शस्त्र बल से भारत पर विजय प्राप्त नहीं की है, बल्कि गूढ़ और निर्लज्ज कूटनीतिक युक्तियों से यहांअपने प्रभुत्व का जाल फैलाया है। ब्रिटिशों को मात देने के लिए भारतवासियों से कुछ नेता उन्हीं के चिन्तन की वकालत कर रहे थे, वह इसके लिए उपयुक्त नहीं था। दूसरी ओर, निरा आतंकवाद भी अपने आप में उचित नहीं था क्योंकि वह भारत की मूल परंपरा के प्रतिकूल था। लाला लाजपतराय का कहना था कि आज का भारतीय राष्ट्रवाद ब्रिटिश शासन को चुनौती देने केलिए पूरी तरह समर्थ और तैयार हैं। राष्ट्रवाद शहीदों के

रक्त से पुष्ट होता है। अत्याचार और दमन उसे और भी उत्तेजित कर देते हैं। सच्ची बात यह है कि अंग्रेज तानाशाहों ने ही भारतीय राजनीति में आतंक और प्रतिहिंसा की गतिविधियों को जन्म दिया है।

लाला जी ने स्वयं अपने प्रयासों से शिक्षा के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान किया। लाला जी छुआछूत के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने आर्य समाज के स्कूलों और गुरुकुलों में बिना किसी भेदभाव के हरिजन छात्रों के प्रवेश की व्यवस्था की। शिक्षा शास्त्री और समाज सुधारक के रूप में लाला जी का देश के अग्रणी नेताओं में नाम लिया जाता है। 1863-1908 की अवधि में उत्तरी भारत में भयानक अकाल पड़ा। अनेक बच्चे अनाथ हो गये। ईसाई पादरियों ने अकाल पीड़ितों की सहायता के नाम पर बच्चों का धर्म परिवर्तन करना प्रारम्भ कर दिया। लाला जी ने इसका डटकर विरोध किया।

स्वराज्य के साथ सामाजिक न्याय आवश्यक

लाला जी अपने क्रान्तिकारी विचारों को व्यक्त करने में कभी झिझक का अनुभव नहीं करते थे। उनका मत था कि स्वराज से हम देश को विदेशी शोषण और दमन से तो बचा सकते हैं, परन्तु यदि हम सामाजिक न्याय की ओर ध्यान नहीं देंगे तो हम देश को पद-दलित वर्गों के आक्रोश से नहीं बचा सकते। लाला लाजपत राय के अनुसार देशभक्ति और स्वदेशी की भावना राष्ट्रवाद की पूरक है। सच्ची देशभक्ति यह मांग करती है कि व्यक्ति समाज के व्यापक हित में निजी हित का बलिदान कर दे। देशभक्ति राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना है। यह 'राज्यभक्ति' से भिन्न है। आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता के नाते लाला लाजपत राय ने राष्ट्रीय जीवन में धर्म की भूमिका और देश के अतीत गौरव के पुररूत्थान को विशेष महत्व दिया, परन्तु साथ ही उन्होंने आधुनिक शिक्षा, आधुनिक चिन्तन और आधुनिक राजनीतिक संस्थाओं से गहरा सरोकार प्रकट करते हुए अतीत और वर्तमान के बीच प्रभावशाली संपर्क सेतु का निर्माण किया। स्वराज की मांग के साथ-साथ उन्होंने यह सुझाव भी दिया कि अंग्रेजों ने भारत में जो जमींदारी प्रथा और एकाधिकार-पूंजीवाद स्थापित किया है, भारत की उन्नति के लिए उसका अंत आवश्यक है। एक ओजस्वी वक्ता होने के साथ-साथ लाला जी एक सफल वकील, कुशल पत्रकार और लेखक भी थे। उन्होंने यंग इण्डिया नामक मासिक पत्रिका निकाली और इंडियन इन्फोरमेशन ब्यूरो की स्थापना की। इनकी कृतियों में 'यंग इंडिया' (तरूण भारत) 1917 'द पोलिटिकल फ्यूचर ऑफ इंडिया' (भारत का राजनीतिक भविष्य 1919 और 'नेशनल एजूकेशन इन इंडिया' (भारत में राष्ट्रीय शिक्षा) 1920 विशेष महत्वपूर्ण है। साईमन कमीशन का विरोध करते समय लाला जी पर अंग्रेजों द्वारा घातक लाठियों के प्रहार किए गए। लाठियों के प्रहारों से लगे घावों के फलस्वरूप लाला जी 17 नवम्बर 1928 को स्वतंत्रता की बलिवेदी पर विदा हो गए। अपने शरीर पर लाठियों के प्रहार झेलते समय लाला जी ने जो ऐतिहासिक शब्द कहे थे वे पूरी तरह से सत्य सिद्ध हुए। लाला जी ने कहा था कि मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील बनेगी। ऐसा ही रहा तो भारत ही नहीं विश्व से ब्रिटिश शासन का नामोंनिशान मिट जायेगा। वास्तव में यह कथन बाद में स्वतः ही प्रमाणित हो गया।

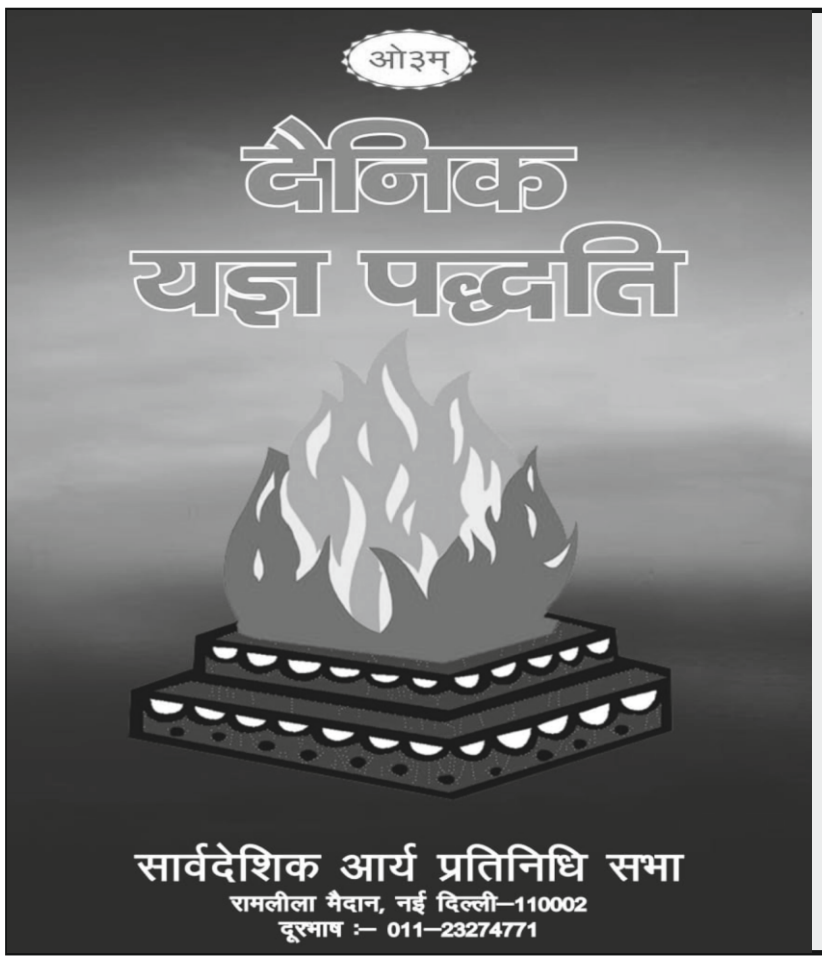

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

29 जनवरी पुण्य तिथि पर विशेष

देश भक्ति के प्रेरणा स्रोत महाराणा प्रताप

– उदयप्रताप सिंह चौहान

स्वतन्त्रता की प्रथम ज्योति प्रज्ज्वलित करके भारत के गौरवशाली, अतीत की रक्षा के लिए एवं देशवासियों को दासता के जीवन से छुटकारा दिलाकर स्वाभिमान के लिए मर मिटने का पाठ पढ़ाने वाला स्वतन्त्रता देवी का अनन्यभक्त महाराणा प्रताप जिसने कहा था कि 'परतन्त्र बनकर महलों का निवास, चांदी के पात्रों में भोजन करने से, कहीं अच्छा है जंगलों में भूमि शयन, और फूल फल पादपों और घास की रोटियां, जिनमें स्वतन्त्रता की सुगन्ध तो विद्यमान है।'

इसी महान स्वतन्त्र दीप से प्रकाशित हुआ छत्रपति शिवाजी का अन्तःकरण और अपने जीवन भर मराठा राज्य के लिए लड़ती रही महान वीरांगना झांसी की रानी ने भी इसी इतिहास को पढ़कर जीवन के अन्तिम क्षणों तक ब्रिटिश हुकूमत से युद्ध किया और ब्रिटिश सरकार के जोर जुल्म के समक्ष आत्मसमर्पण नहीं किया। इसी प्रेरणा से ही प्रेरित होकर वर्तमान स्वतन्त्रता के प्रणेता के रूप में सर्वप्रथम श्री खुदीरामबोस ने देश की बलिवेदी का नमन किया, फिर असंख्य देशभक्तों ने इस स्वतन्त्रता की वेदी पर अपने को बलिदान करते हुए कहा कि 'सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुएं कातिल में हैं।' इस पंक्ति में रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव, सरदार भगतसिंह, सुभाषचन्द्र बोस आदि खड़े हैं। हम विस्मृत नहीं कर सकते बहादुरशाह जफर को जिसके शब्द थे कि 'बागियों में जब तलक ताकत है एक ईमान की, तख्त लन्दन तक चलेगी तेग हिन्दोस्तान की।'

ये सब स्वतन्त्रता प्रेमी महाराणा प्रताप की प्रेरणा से ही प्रेरित थे। उक्त अमर शहीद जिनकी कुर्वानियों ने ब्रिटिश सिंहासन को हिला दिया, अंग्रेजी हुकुमरानों के दिल दहल गये और उनको भारत स्वतन्त्र करने केलिए विवश होना पड़ा हम लकीर के फकीर बनकर भले ही कहते रहे कि किसी व्यक्ति विशेष की कृपा से हमें स्वतन्त्रता देवी के दर्शन हुए हैं। परन्तु यह तथ्य सर्वमान्य नहीं है।

'स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' इसी उक्ति के प्रेरणा स्रोत थे महाराणा प्रताप। इस बात से कदापि इन्कार नहीं किया जा सकता कि स्वतन्त्रता की भावना जाग्रत करने का श्रेय 'राणा' को ही जाता है जिन्होंने विदेशी मुगलियां शासन के विरुद्ध स्वतन्त्रता का पहला बिगुल बजाया था। आज हम और देश के नेता उस महान सेनानी को स्वतन्त्रता सेनानियों की उस पंक्ति में इसलिए नहीं खड़ा करना चाहते हैं कि कहीं हमारा मुस्लिम वोट बैंक अन्यत्र न खिसक जाये। परन्तु उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि 'हल्दीघाटी' का वह युद्ध उसी प्रकार से विदेशी शासन के विरुद्ध था जिस प्रकार भारत का स्वतन्त्रता संग्राम। 'हल्दी घाटी' का युद्ध किसी जाति अथवा वर्ग विशेष के विरुद्ध न होकर एक विदेशी हुकूमत के विरुद्ध था और उस प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का नायक था 'प्रणवीर, राणा प्रताप'। उस महान स्वतन्त्रता सेनानी की सेवाओं को यदि हमने तुष्टीकरण की आग में झोंक दिया तो इतिहास हमें माफ नहीं करेगा। क्योंकि हल्दी घाटी और यह स्वतन्त्रता संग्राम दोनों विदेशी सत्ता के विरुद्ध हुए चाहे वह मुगलियां हुकूमत हो अथवा अंग्रेजी सत्ता इस प्रकार से यह निर्विवाद सत्य है कि राणा प्रताप ही इस देश के प्रथम स्वतन्त्रता के प्रेरणा श्रोत थे।

हिन्दुओं की दशा अकबर की नीति (कवित छन्द) गौर गुमान, मान दे चुके थे कौड़ियों में, हिन्दुओं की एकता का छिन्न भिन्न तार था। किए गुलाम इस्लाम की लगाम लगा, इसका अगाड़ी कुछ और ही विचार था। हो न सकी पूर्ण अभिलाषा परिभाषा क्योंकि जीवन में बाधक हमेशा एक खार था।

'अकबर' यदि बेलगाम का तुरंग था तो, चढ़ने को राणा बेलगाम का सवार था।

राणा ने भारत की सोयी हुई हिन्दू जाति को उस समय जगाया था जब हम परतन्त्रता के गर्त में गिर चुके थे, हमारा गौरव दिशाहीन होकर नष्ट हो रहा था।

प्रताप पराक्रम (हल्दीघाटी)

चीघते थे हाथी हय हींसते थे बारबार
बैरियों में हल्ला सुन रल्ला मच जाता था
कट-कट रूण्ड, मुण्ड-झुण्ड झक मारते थे
झट्ट-पट्ट वीरता का झण्डा गड़ जाता था।
हेकड़ों की हेकड़ी दबा के दुम भागती थी

मुगलों का सारा मदमान झड़ जाता था
लेकर स्वतन्त्रता की तेज तलवार जब,
प्रणवीर प्रबल प्रताप अड़ जाता था।

उस महान स्वतन्त्रता प्रेमी ने हल्दी घाटी के युद्ध में जो पराक्रम दिखाया वह स्मरणीय एवं वन्दनीय तथा अभिनन्दीय है।

स्वतन्त्रता संग्राम जो हल्दी घाटी के युद्ध के रूप में लड़ा गया उसको केवल इस भय से हम स्वतन्त्रता संग्राम नहीं कहना चाहते हैं कि कहीं वह भी बाबरी मस्जिद न बन जाए और लोग एक बहाना लेकर राजनीति की रोटियां न सेंकने लगे। परन्तु उस शासक श्रेणी के मुगलों और आज के मुसलमानों में अन्तर का अनुभव नहीं करते। आज का मुसलमान और स्वतन्त्रता संग्राम का मुसलमान भारतीय और भारत का नागरिक है, शासक नहीं है।

हमने तमाम जन्म दिन और जयन्तियों की घोषणा सार्वजनिक कर डाली परन्तु उस स्वतन्त्रता के प्रथम दीप के जयन्ती की घोषणा सार्वजनिक रूप में करने में हमें भय है, करना भी चाहते हैं तो तुष्टिकरण हेतु हमारे ही नेता अगुस्तनुमाई के लिए तैयार है हम हिन्दू, हिन्दी हिन्दुस्तान का स्वप्न देखते हैं। भाषणों से जनता को मकड़जाल मेंफंसाते हैं परन्तु हिन्दू, हिन्दी, हिन्द, हिन्दू की नाक बचाने वाले उस वीर को भूल बैठे हैं यदि सरकार इसमें पहल नहीं करती तो देश प्रेमी जनता को इस जयन्ती को सार्वजनिक रूप में मनाने के लिए सरकार को विवश करना चाहिए। उस विभूति ने महल, अटारी, राजपाट, स्वर्णपात्र छोड़कर सपरिवार जंगलों में रहकर घास फूस की रोटियां, फल पत्र खाकर दिन बिताये थे और प्रतिज्ञा की थी कि जब तक देश को स्वतन्त्र नहीं कर लूंगा भीलों की तरह जीवन बिताऊँगा। उस महान देशभक्त की प्रतिज्ञा की कुछ पंक्तियों पर आप दृष्टिपात करें:-

प्रताप-प्रतिज्ञा

जंगलों में घूमूंगा, पहाड़ों पै करूँगा वास,
जीवन की घाटियों में ऊधम मचाऊँगा।
खाने को भोजन नसीब यदि होगा नहीं,
पादपों के फूल पत्र बीन-बीन खाऊँगा।
हाथ में रहेगा हथियार यदि न कोई तो
खाली नखों से शत्रु आसन डिगाऊँगा।
भूखे प्राण त्याग दूंगा, बस्ती छोड़ दूंगा
और हस्ती मेंट दूंगा, परशीश न झुकाऊँगा।।

चाहे भील वीरभारी बाँकुरे लड़ाकू,
रणक्षेत्र में दिखाएं पीठ जीवन ये ख्वार हो।
इष्ट मित्र, बन्धु भाईसारा परिवार चाहे,
कुन्नत बजाये अल्लाह अकबर प्यार हो।
रोटी बेटी चोटी चाहे खोटीपड़ जाये सबकी,
दिन दूंना इस्लाम धर्म का प्रचार हो।
विश्व की विभूति सारी शक्तियां हो एक ओर,
एक ओर चेतक और मेरी तलवार हो।

आज का नेतृत्व तो केवल कुर्सी की लड़ाई में संलग्न है।इनसे देश का भला कैसे सम्भव है। आज का नेतृत्व पूंजीवादी बनने में लगा है। देश कल्याण जन सेवा तो केवल चुनाव के समय की बात रह गयी है लेकिन याद रहे उन्हें इतिहास और भावी युवक माफ नहीं करेगा जो जातिवाद और वर्गवाद से देश में जहर घोल रहे है।।

अन्त में इस अवसर पर मैं उन अमर शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा हूँ और स्वतन्त्रता के उस ज्योति पुष्प राणा प्रताप को मेरी विशेष श्रद्धांजलि इसलिए कि उस महान सेनानी ने स्वतन्त्रता प्राप्ति का मार्गदर्शन कराया।

देशभक्ति के प्रेरणास्रोत तुम्हें शत-शत नमन।

- सुखसेनपुर, जनपद कन्नौज (उ. प्र.)

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
यजुर्वेद भाष्य
भारी छूट पर उपलब्ध
250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य
मात्र 150 रुपयें में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)
(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)
प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
'दयानन्द भवन' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2
दूरभाष :- 011-42415359, 23274771

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न

आर्य समाज में युवाओं को जोड़ने का अभियान चलाया जाएगा –स्वामी आर्यवेश

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर विश्वभर में कार्यक्रम होंगे –अनिल आर्य

रविवार 15 जनवरी, 2023 को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सार्वदेशिक सभा मुख्यालय, महर्षि दयानन्द भवन 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य जी की अध्यक्षता में सोल्लास संपन्न हुई। कार्यकारिणी की बैठक में विभिन्न प्रांतों से प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

इस बैठक में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ऑन लाईन के माध्यम से जुड़कर कहा कि युवा पीढ़ी को महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा से जोड़ने के लिए अभियान चलाये जाने की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है, क्योंकि किसी भी कार्यक्रम को तीव्र गति प्रदान करने में युवाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। युवाओं के माध्यम से ही स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की विचाराधारा को जन–जन तक पहुंचाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा प्रतिपादित अमर ग्रंथ "सत्यार्थ प्रकाश" को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि देश के स्वतंत्रता संग्राम में सर्वाधिक योगदान आर्य समाज का रहा है, लेकिन आज इतिहास को छिपाने का प्रयास किया जा रहा है और ऐसे लोग श्रेय लेने का प्रयास कर रहे हैं जिनका आजादी में कोई विशेष योगदान नहीं रहा है। इतना ही नहीं हो रहा है बल्कि इतिहास को तोड़–मरोड़कर आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को नजरअंदाज करने का भी षड्यन्त्र चला जा रहा है। इसलिए आज की युवा पीढ़ी को जागरूक करने की आवश्यकता है तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में पूरे देश में जगह–जगह सम्मेलन एवं गोष्ठियाँ आयोजित करके स्वामी

दयानन्द जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को प्रचारित–प्रसारित करने का कार्य तीव्र गति से करने की आवश्यकता है। इस बैठक में उपस्थित सभी आर्यजनों से अपील करता हूँ कि स्वामी दयानन्द जी के विचारों एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों से समझौता न करें और अपनी पूरी ताकत लगाकर आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द जी द्वारा देश एवं समाज के लिए किये गये कार्यों को प्रचारित–प्रसारित करने का संकल्प लें।

इस अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य जी ने आह्वान किया कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 199वीं जयंती आगामी 15 फरवरी, 2023 को आ रही है। अतः 200वीं जयंती 15 फरवरी, 2024 तक महर्षि दयानन्द के संदेश को जन–जन तक पहुंचाने के लिए विश्वभर में अनेकों कार्यक्रम आयोजित किए जायेंगे। पाखंड एवं अंधविश्वास के विरुद्ध जन–जागृति, युवा संस्कारों के लिए चरित्र निर्माण शिविर, नशे के विरुद्ध जागरूकता, रक्त दान शिविर, विश्व को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की देन पर चर्चा, स्वतंत्रता संग्राम में स्वामी दयानन्द तथा आर्य समाज के योगदान पर विचार गोष्ठियों का आयोजन आदि अनेकों विषयों पर कार्य करने का निश्चय किया गया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द जी नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे, पूरा जीवन वेद प्रचार के लिए लगाया।

बैठक का संचालन राष्ट्रीय मंत्री श्री देवेन्द्र भगत जी ने किया। उन्होंने कहा कि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा आयोजित होने वाले सम्मेलनों एवं कार्यक्रमों में खेल–कूद, भाषण, निबंध, संगीत आदि प्रतियोगिताओं को भी प्रमुखता के रूप में रखा जायेगा।

इस बैठक में प्रमुख रूप से सर्वश्री सुभाष बब्बर (जम्मू), सुरेश आर्य, के. के. यादव (गाजियाबाद), संजीव ढाका (बागपत), यज्ञवीर चौहान (इंदिरापुरम), कमल आर्य (नोएडा), यशोवीर आर्य, रामकुमार आर्य, स्वतन्त्र कुकरेजा (करनाल), योगेन्द्र शास्त्री (जींद), रामकृष्ण शास्त्री (बहरोड़), धर्मपाल आर्य, अशोक जांगिड़ (रोहतक), रामफल खरब, रवि राणा, अमर सिंह सहरावत, ऋषिपाल शास्त्री, गौरव झा आदि ने अपने विचार रखे और अभियान को सफल बनाने का आश्वासन दिया।

कार्यकारिणी की बैठक उत्साहपूर्ण वातावरण में शांति पाठ के साथ सम्पन्न हुई। अन्त में सभी के लिए सुन्दर भोजन की व्यवस्था की गई थी जिसे सभी ने ग्रहण किया।

आर्य समाज हिम्मतपुर काकामई, एटा का प्रतिनिधि मंडल पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी से मिलकर चर्चा की

आर्य समाज हिम्मतपुर काकामई जनपद एटा के संस्थापक आचार्य श्री जयप्रकाश शास्त्री जी के नेतृत्व में दिनांक 21 जनवरी, 2023 को भारत के पूर्व राष्ट्रपति आदरणीय श्री रामनाथ कोविंद जी से उनके आवास पर शिष्टाचार भेंट हुई। श्री शास्त्री जी एवं पूर्व राष्ट्रपति जी ने अपनी साथ की पुरानी स्मृतियों को पुनः याद करते हुए अत्यंत मधुर वांग्मय में वार्तालाप किया।

श्री शास्त्री जी ने पूर्व राष्ट्रपति को जानकारी दी कि ग्रामीण क्षेत्रों में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं को जन–जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से ग्राम हिम्मतपुर काकामई में आर्य समाज की स्थापना की है जिसके बाद से आस–पास के अन्य गांवों में भी आर्य समाज की स्थापना की प्रक्रिया निरंतर चल रही है। आर्य समाज हिम्मतपुर काकामई को प्रमुख रूप से केंद्र बनाकर ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, चिकित्सा तथा मानवीय कार्यों को किया जाएगा जिस पर उन्होंने खुशी प्रकट की। आर्य समाज हिम्मतपुर काकामई एटा में होने वाले आगामी कार्यक्रम में आने का अनुरोध किया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर एटा आने की इच्छा जताई।

श्री जयप्रकाश शास्त्री ने पूर्व राष्ट्रपति जी को जानकारी दी कि आगामी महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयंती पर भारत सरकार द्वारा स्वामी जी के योगदान को याद करते हुए सरकारी स्तर से कार्यक्रम किया जाएं जिसे उन्होंने स्वीकार कर सरकार से अनुरोध करने का आश्वासन दिया। पूर्व राष्ट्रपति जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के "लौटो वेदों की ओर" नारे को सार्थक करने के लिए कार्य करने को प्रोत्साहित किया तथा अपना यथोचित योगदान देने का आश्वासन भी दिया।

पूर्व राष्ट्रपति जी से भेंट करने वाले प्रतिनिधि मंडल में श्री विवेक आर्य, देवेश आर्य, धर्मेंद्र शास्त्री, शैलेश आर्य उपस्थित रहे।

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन	– पृष्ठ 232	–	मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन	– पृष्ठ 248	–	मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शनम्	– पृष्ठ 240	–	मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन	– पृष्ठ 156	–	मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि	– पृष्ठ 278	–	मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ
25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के अन्तरंग सदस्यों, प्रमुख कार्यकर्ताओं तथा आर्य वीरदल के पदाधिकारियों की आवश्यक बैठक 22 जनवरी, 2023 को हुई सम्पन्न

महर्षि दयानन्द जी की जयन्ती पर जोधपुर में होगा तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन – स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज के कार्यों को करने के लिए नौजवान आगे आयें – स्वामी आदित्यवेश

देश–विदेश से भारी संख्या में आर्यजन सम्मेलन में होंगे सम्मिलित – बिरजानन्द एडवोकेट

हजारों आर्य वीर सम्मेलन का मुख्य आकर्षण होंगे – भंवर लाल आर्य

आर्य वीरदल जोधपुर ने सम्मेलन को सफल बनाने के लिए कटिबद्ध – हरि सिंह आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अंतरंग सदस्यों, प्रमुख कार्यकर्ताओं तथा आर्य वीरदल के पदाधिकारियों की आवश्यक बैठक 22 जनवरी, 2023 (रविवार) को उम्मेद चौक स्थित आर्य समाज फोर्ट स्थल पर हुई। यह बैठक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता के सान्निध्य में में हुई। बैठक की अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने की। इस बैठक में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती व मई, 2023 में महर्षि के जोधपुर आगमन के 140 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में जोधुपर में एक भव्य अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने का फैसला सर्वसम्मति से किया गया। मई, 2023 में होने वाले इस समारोह में देश के विभिन्न प्रान्तों तथा अन्य देशों से भी हजारों की संख्या में आर्यजन जोधपुर पहुंचेंगे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने बैठक को संबोधित करते हुए केंद्र सरकार तथा प्रांतीय सरकारों से अपील किया कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्मदिवस के कार्यक्रम को सरकारी कार्यक्रम का हिस्सा बनाएं। राजस्थान में स्वामी दयानन्द जी का कार्यक्षेत्र बहुत बड़ा रहा है। बड़ी–बड़ी रियासतों के राजा उनके अनुयाई रहे। इसलिए उनके 200वें जन्मोत्सव को सरकारें धूमधाम से मनाने का कार्यक्रम बनायें। स्वामी आर्यवेश जी ने भावी योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द जी की दूसरी जन्म शताब्दी को लक्ष्य करके 200 विषयों पर लाखों की संख्या में ट्रैक्ट छापे जाएंगे। 200 सेमिनारों आयोजित किये जायेंगे इन सेमिनारों में महर्षि दयानन्द जी के भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन तथा देश के नव–निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान तथा सामाजिक सौहार्द बनाने में उनकी भूमिका पर विद्वानों के व्याख्यान होंगे और सैकड़ों के लेख समाचार पत्रों में प्रकाशित कराये जायेंगे। इसी प्रकार जिला स्तरीय, प्रांत स्तरीय तथा राष्ट्रीय स्तर के युवा सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे। देश–विदेश में अलग–अलग स्थानों पर 200 वेद प्रचार यात्राएं निकाली जाएंगी। 200 जीवनदानी कार्यकर्ता तैयार किए जायेंगे, जो ऋषि दयानंद के कार्यों को देश दुनिया में प्रचारित करेंगे। स्वामी जी ने आर्यजनों से अपील करते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों के अनुरूप आर्य विद्वानों को विशेष महत्त्व देने की आवश्यकता है और आर्य समाज के माध्यम से उनके सिद्धान्तों तथा विचारों को जन–जन तक पहुँचाने की आवश्यकता है। आर्य समाज का कार्य सकारात्मक रूप से जमीनी स्तर पर करने की आवश्यकता है। स्वामी जी ने बैठक में सुझाव दिया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जोधपुर आगमन के मई, 2023 में 140 वर्ष पूरे हो जायेंगे। इस उपलक्ष्य में जोधपुर में एक विशाल सम्मेलन का आयोजन होना चाहिए। स्वामी जी के इस प्रस्ताव के समर्थन में आर्य वीरदल जोधपुर के अध्यक्ष श्री हरि सिंह आर्य ने कहा कि इस सम्मेलन के लिए आर्य वीरदल जोधपुर अपनी पूरी ताकत लगाकर कार्य करेगा। आर्य वीर दल राजस्थान के अध्यक्ष श्री भंवर लाल आर्य तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द जी ने भी प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए स्वामी जी को आस्वस्त किया कि वे इस सम्मेलन को एक ऐतिहासिक सम्मेलन का रूप देने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। प्रस्ताव के समर्थन में श्री दलपत सिंह आर्य जलौर, श्री राजेन्द्र सिंह गहलोत व श्री अचल चन्द आर्य बालोतरा, श्री हरदेव सिंह आर्य शिवगंज, श्री गजे सिंह भाटी, श्री उम्मेद सिंह आर्य, श्री भंवरलाल हठवाल, श्री शिव प्रकाश सोनी, श्री लक्ष्मण सिंह आर्य, श्री मदन गोपाल आर्य, श्री दीपक पंवार, श्री जितेन्द्र सिंह आर्य आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

मिशन आर्यवर्त के निदेशक, गुरुकुल धीरणवास के प्रधान युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी के जोधपुर आगमन के 140 वर्ष पूर्ण होने तथा 200वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में जोधपुर में यह जो कार्यक्रम आयोजित होने जा रहा है, इसमें देश–विदेश के हजारों प्रतिनिधि भाग लेंगे। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के नौजवान कार्यकर्ताओं को कमर कस करके स्वामी दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती मनाने का संकल्प लेना चाहिए और प्राण–पण से अभी से जुट जायें।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री विरजानंद एडवोकेट ने बताया कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी के जोधपुर आगमन के 140 वर्ष पूर्ण होने पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाले इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए राजस्थान के प्रत्येक जिले का सभा के अधिकारी दौरा करेंगे और अधिक से अधिक संख्या में जोधपुर आने का लोगों को निमंत्रण देंगे। उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन में जहां राजनेताओं को आमंत्रित किया जायेगा वहीं आर्य समाज के संन्यासी, विद्वान तथा कार्यकर्ताओं को विशेष सम्मान दिया जायेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपप्रधान श्री नारायण सिंह आर्य ने कहा कि यदि हम सब लोग एकजुट होकर कार्य करेंगे तो यह सम्मेलन निश्चित रूप से ऐतिहासिक सम्मेलन होगा।

शेष पृष्ठ 8 पर

आधुनिकता और कैंसर

– डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह चौहान

आधुनिकता की चमक दमक ने मनुष्य को प्राकृतिक साधनों व प्रकृति से दूर कर दिया है। मनुष्य भोजन आवास प्राकृतिक छटा चिड़ियों से चहचहाते, वन में कूदते फांदते पशु पक्षी सुन्दर पवित्र जल युक्त सरोवर सरिता हरे भरे जंगल आसमान में शुद्ध वायु ऊँचे हरे–भरे, झरनों युक्त पर्वतों से दूर बन्द एक स्थानीय शौचालय स्नानागार, भोजनालय एयर कण्डीशनिंग टी. वी., फ्रिज सौंदर्य साधन ब्रुश (दन्त धावन हेतु) व कृतिम अप्राकृतिक परिधानों जैसे भौतिक आधुनिक कृत्रिम साधनों तक सीमित रह गया है अत्याधिक धनार्जन की तीव्र इच्छा में वह जंगल का भ्रमण सूर्योदय नदियों का बहता जल पशु पक्षियों के कलरव जैसी सुन्दर छटा को देखने से वंचित हो गया है। ड्राईंग रुमों में उसने वन पक्षी सिंह आदि के चित्र लगा कर उसकी कृत्रिम पूर्ति कर मन को समझाना उचित समझ लिया है। वायु जल भोजन व निर्माण आदि के कृत्रिम साधनों में आज का मानव स्वास्थ्य के नियम प्राकृतिक आनन्द को भूलता जा रहा है और दिन पर दिन रोगों से ग्रस्त होता जा रहा है। कृत्रिम साधन कैंसर के जनक बन गए हैं।

पर्यावरण प्रदूषण सिगरेट, पान, मसाला, चाकलेट, रंगीन ठण्डे पेय, चटपटे भोजन व औद्योगिकीकरण तथा परमाणु युद्ध बम आदि के प्रयोगों से कैंसर जैसी भयानक व्याधियों ने उग्र रूप धारण कर लिया है। प्रदूषण से कैंसर की वृद्धि पर अधिक प्रभाव पड़ा है पर्वतों का कटना नदियां सरोवरों भूमि के जल का प्रदूषण, कीटनाशकों का अत्याधिक प्रयोग औद्योगिकीकरण मोटर वाहनों डीजल पेट्रोलियम पदार्थों का वायु में छोड़ा जाना हानिकारक गैसों की वायु में उपस्थिति से वायु प्रदूषण, महानगरों में ध्वनि प्रदूषण से मनुष्य का स्वास्थ्य अत्याधिक प्रभावित हुआ है। ईश्वर की विचित्र प्राकृतिक छटा को नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया है। मनुष्य के रहन सहन आवास, भेजन की विधि कार्यकलापों में जो परिवर्तन आया है वह प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध है और मनुष्य के दुःख का कारण बनता जा रहा है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के पर्यावरण प्रदूषण समिति के अनुसार कैंसर रोगियों में ६० से ८० प्रतिशत कैंसर पर्यावरण प्रदूषण के कारण ही उत्पन्न होते हैं। सन् १९६६ के खाड़ी युद्ध से पृथ्वी का वातावरण अत्यधिक प्रदूषित हुआ। बम विस्फोटों, तेल के कुंओं से निकला धुआं, आग व विषाक्त गैसों से पृथ्वी के चारों और रहने वाली ओजोन की पर्त हल्की हो गई और जीवन को नष्ट करने वाली पराबैगनी किरणें धरातल पर आनी आरम्भ हो गई जिससे त्वचा कैंसर में वृद्धि हुई है। ओजोन पर्त का दस प्रतिशत क्षय हो चुका है।

उद्योगों से निकलने वाली गैसें भी प्रदूषण करती हैं। समस्त पर्यावरण प्रदूषित होता है। वायु वनस्पतियां जल सभी विषाक्त हो जाते हैं। यही कारण है वातावरण आकाश में पक्षियों का स्वच्छन्द रूप से विचरण पहले जैसा नहीं रहा अकेला अमेरिका जो विश्व की आबादी का ५० प्रतिशत वायुमण्डल की कार्बन डाईआक्साइड का २२ प्रतिशत भाग वातावरण में छोड़ता है। बड़े औद्योगिक देशों में प्रदूषण की समस्या सर्वाधिक है।

कृषि व भूमि बागों में प्रयुक्त कीटनाशकों का अत्याधिक प्रयोग आधुनिक रहन–सहन पेट्रोल, डीजल गाड़ियों का प्रयोग एण्टीवायोटिक्स औषधियां, गर्भनिरोधक पिल्स, धूम्रपान, मद्यपान, मादक द्रव्य हेरोइन आदि के प्रयोग से कैंसर की वृद्धि हुई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रतिवर्ष छह लाख फेफड़ों के कैंसर के रोगी मिलते हैं। इनमें ८४ प्रतिशत धूम्रपान के कारण कैंसर ग्रस्त होते हैं।

अधिक आराम में रहने आधुनिक अत्याधुनिक भौतिक साधनों का प्रयोग, चटपटे, तले हुए, स्वाद वाले पदार्थ, भोज्य द्रव्य फल दुग्ध आदि को और अधिक स्वाद व रूप में बदल कर खाने से चाकलेट, कटलेट, आमलेट, ठण्डे रंगीन पेय पदार्थों से जठराग्नि विकृत होकर आंत व गुदा स्थान में कैंसर को उत्पन्न कर देती है पश्चिमी आस्ट्रेलिया के शोध कर्ता डॉ. बी. के. आर्मस्ट्रांग के अनुसार मांस खाने वाली महिलाओं को शाकाहारी महिलाओं की अपेक्षा अधिक कैंसर होता है मांस में अनेक विजातीय तत्व एवं हार्मोन होते हैं जो हमारे शरीर के लिए अच्छे व लाभकारी नहीं होते और मांस में उपस्थित रासायनिक तत्वों से कैंसर होता है।

दोष धातु मल शरीर के मूल हैं। इनकी साम्यावस्था से शरीर निरोगी व स्वस्थ रहता है। असम्यक आहार–विहार व वातावरण प्रदूषण से शरीर रोगी हो जाता है। ''दोष धातु मल मूल हि शरीरं''। निरोगी व स्वस्थ व्यक्ति की पहचान यह है कि उसके दोष धातु साम्य अवस्था में रहें मल मूत्र व वेग आदि उचित अवस्था, मन प्रसन्न चित्त हो वह व्यक्ति स्वस्थ होता है।

समदोष समागिनश्च समधातु
मल क्रिया।
प्रसन्नात्मेन्द्रिय मनः स्वस्थ
इत्यमिधीयते।।

दोष धातु मल क्रिया इनकी अवस्था अथवा यूं कहिए शरीर की चपापचय क्रिया (मैटाबोलिक एक्टिविटीज) बिगड़ने पर व्यक्ति रोग ग्रस्त हो जाता है बहुत से व्यक्ति तेज व अधिक गर्म चाय पीते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार ऐसे व्यक्तियों को अन्न नलिका का कैंसर विशेषज्ञों के अनुसार रूस और कैश्पियन सागर के तटीय प्रदेश में रहने वाले व्यक्ति अधिक गर्म चाय पीते हैं वहां उन लोगों में कैंसर का प्रतिशत सर्वाधिक होताहै। इन लोगों में अन्न नलिका का कैंसर होता है विशेषज्ञों के अनुसार काफी पीने वालों को मूत्राशय कैंसर अधिक होता है। जर्दा सुर्ती खाने वालों को ग्रीवा तथा फेफड़ों श्वास नलिका के कैंसर की सम्भावना रहती है। तम्बाकू खाने वालों को वक्क मूत्राशय के कैंसर की अधिक सम्भावना रहती है।

कैंसर रोग से ग्रस्त अंग की स्थिति आकार वर्ण प्राकृतिक स्थिति परिमाप विक्रत हो जाता है। आज कामोत्तेजना यौन पिपासा की तृप्ति हेतु अनेक औषधिया निर्माताओं द्वारा तैयाार की जा रही है कामुकता के साधन श्रृंगार अन्य कृत्रिम पदार्थ बनाए व प्रयोग किए जा रहे हैं इन सबसे कैंसर होने की अत्याधिक सम्भावना रहती है।

आज कार्यालयों, गाड़ी, वायुयान, स्टेशन पर घर में व मेले शादी–विवाह आदि कार्यक्रमों पर तथा हर स्थान पर आप देखेंगे कि अधिकतर व्यक्ति, स्त्री, पुरुष, युवा व बालक भी पढ़े लिखे और अनपढ़ भी तथा उच्च योग्यताधारी भी मुंह में ओष्ट के भीतर गुटखा पान–पराग, पान–मसाला आदि मादक व विषाक्त अप्राकृतिक हानिकारक द्रव्य रख कर ऊँट की तरह जुगाली करते मिल जाएंगे जब बातें करते हैं तो ऊँट की तरह ऊपर आकाश की ओर मुंह कर मसाले की पीक को रोक कर बाते करते मिल जाएंगे। अब वे जो भी बातें करते हैं अस्पष्ट होती है और जहां वे बैठते या खड़े होते हैं थूक कर स्थान को गंदा करने में कोई कसर नहीं छोड़ते इसे वह बड़ा अच्छा स्टैण्डर्ड व मान मर्यादा समझते हैं वह भूलवश नहीं जानते कि बड़े हॉस्पिटलों में गुटखा आदि से होने वाले कैंसर रोगियों से बैड भरे पड़े हैं और कैंसर रोगियों की निरन्तर वृद्धि हो रही है मौत के मुंह में जाकर ऐसे लोग वहां रोते हैं जब कि सब कुछ लुट चुका होता है। पान मसाला तम्बाकू सिगरेट सामाजिक बुराई है। रोगों व कैंसर को आमन्त्रण है। इससे सदैव दूर रहना चाहिए।

कैंसर की पहचान वैदिक काल में भी थी। ऋग्वेद में इसका अनेक स्थानों पर वर्णन है अध्याय एक प्रकरण–५१ तथा ऋचाएं–६, ऋग्वेद–२–११–२० तथा २–१४–४ में इसका वर्णन अर्बुद नाम से है। अथर्ववेद के उपवेद आयुर्वेद में इसका वर्णन है सुश्रुत संहिता में अर्बुद की चिकित्सा भी बताई है–

''नियात्थ वा शास्त्रमपोहन मेदोदहेत'' सश्रुतचिकित्साध्याय १८:१८

''मेदोऽर्बुदं स्विन्नमथोऽविदार्ण विशोध्य सिव्येद्गत रक्तमाशु'' सुश्रुत चिकित्साध्याय, १८:३१-४१

वैदिक काल में घातक रोगों महामारी कैंसर जैसे रोगों से रक्षा के समुचित उपाय थे। उस समय की व्यवस्था प्राकृतिक रूप से वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अत्यन्त श्रेष्ठ शुद्ध व पवित्र थी। वैदिक उपायों को आज भी अपनाएं तो हमें भयानक व्याधियों व अंधेरे भविष्य से मुक्ति मिल सकती है हमें मिलकर कुछ उपाय करने चाहिए।

वायु, जल, मुद्रा, रसायन, ध्वनि, रेडियो धर्मी प्रदूषण को रोकना चाहिए। वृक्षों व वनों की कटाई बन्द कर देनी चाहिए पर्वतों को तोड़ना बन्द कर दें, नदियों में गन्दे नालों का गिरना रोकें। शव आदि का दाह संस्कार नदियों पर न करें ना ही उसमें अस्थि शव मल, मूत्र, कीचड़ आदि विसर्जित करें।

वृक्षारोपण की गति बढ़ाएं घर के आंगन दीवारों गली, मैदानों, बड़े मार्गो कें किनारों जंगल व खेतों के पास अधिक से अधिक वृक्ष लगावें बहुत से वृक्ष अधिक मात्रा में आक्सीजन छोड़ते व वातावरण को स्वच्छ बनाते हैं इसके साथ छाया फल औषधियां प्रदान करते हैं इन्हें अरोपित करें।

आम, अमरूद, अर्जुन, एरण्ड, लाल कनेर, वोगेवनिवलिया अशोक, जंगल जलेवी, संहिनन, तेन्दू, गुलमोहर, नीम पलास, नींबू, कटहल, कदम्ब, बबूल, आंवला, बरगद, पिलखन, इमली, खजूर, सहिंगन, मदार, पीला कनेर आदि सहस्रों प्रकार के पौधे व वनस्पतियां जिनसे हम अपने चारों ओर के पर्यावरण को सुन्दर बना सकते हैं। मनुष्य चौबीस घण्टे में औसतन २२००० बार श्वास लेता है और लगभग १६ किलोग्राम आक्सीजन का उपयोग करता है इतनी आक्सीजन के लिए इतने वृक्ष हमारे रहने चाहिए जो दिन में इतनी आक्सीजन छोड़ते हों अर्थात परिस्थिति के संतुलन के लिए सघन छेत्र का वन क्षेत्र बाकी से आधा तो होना ही चाहिए परन्तु हमारे यहां वन केवल दसवां भाग ही रह गए हैं।

पर्यावरण हेतु कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के डोन हुरजान ने अम्लीय वर्षा व पर्यावरण की रक्षा हेतु वृक्षारोपण करना ही अनिवार्य बताया है इनमें ध्वनि वायु प्रकाश आकाश के प्रदूषण दूर होते हैं।

पर्यावरण के संतुलन हेतु अग्निहोत्र अत्यन्त उपयोगी कार्य है वैदिक काल से ही आर्यों ने अग्निहोत्र कार्य को प्राथमिकता दी है। इससे सुगन्धित द्रव्य अपामार्ग, आक, चन्दन पलाश देवदार आम्र की समिधा तथा उपयोगी औषधीय सामग्री से वायुमण्डल पवित्र होता है आक्सीजन की मात्रा बढ़ती तथा हानिकारक गैसों का नाश होता है। अग्निहोत्र से शरीर निरोगी होता है मन को शांति मिलती व पर्यावरण पवित्र होता है।

योगासन करना भी शरीर को कैंसर आदि घातक व्याधियों से दूर रखने का उपाय है पद्मासन, शवासन, पवनमुक्तासन, बज्रासन, शीर्षासन, उत्तानपादासन, ताड़ासन आदि करके शरीर को हम निरोगी रख सकते हैं।

मुख्य बात यह है कि आज के कृत्रिम जीवन व साधनों से जहां तक हो सके दूर रहें। भोजन पवित्र शुद्ध हो प्रकृति के सम्पर्क में अधिकतर रहे तले चटपटे आधुनिक पेय मिठाई व्यंजन परिधान, कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधनों को त्याग प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठना शौचादि हेतु मैदान में जाना पैदल घूमना औषधियों में वनस्पतिक औषधियों का प्रयोग करें आवश्यकता पर आधुनिक चिकित्सा की सहायता भी लें सामान्यतः कृत्रिम साधनों से बचे।

दिल्ली, मद्रास, कोलकाता जैसे महानगरों में मनुष्य का कृत्रिम साधनों का उपयोग उनकी मजबूरी है। दूर–दूर तक खुली हवा वहां नहीं मिलती कारखानों के मजदूर प्रदूषण में ही जीवन काट देते हैं।

फिर भी कितनी भी आबादी व समस्या हों, मनुष्य अग्निहोत्र तो कर ही सकता है। आज की विकास परिस्थितियों में अग्निहोत्र अत्यन्त श्रेष्ठ व उपकारी पवित्र कार्य है। प्रत्येक घर में अग्निहोत्र होने लगे तो भारत ही नहीं बल्कि विश्व की पर्यावरण प्रदूषण की समस्या हल हो सकेगी और मानव का आधिभौतिक आधिदैविक व आध्यात्मिक रूप से अवश्य ही कल्याण हो सकेगा।

शरीर का अभ्यंग, मालिश, व्यायाम, परिश्रम, प्रातःकाल में भ्रमण करना, प्राणायाम करना, गाय का दूध, फल व हरी सब्जी प्रयोग करना योगाभ्यास करना, दिनचर्या आदि का वैदिक आयुर्वेद में बताई विधि के अनुसार पालन करें तो मनुष्य सौ वर्ष की आयु प्रसन्नता पूर्वक निश्चित ही पूरी करेगा।

आज कल के कृत्रिम साधन कोल्डड्रिंक, काफी, चाय मद्य, मांस मादक पदार्थ, चाकलेट व अत्यन्त आरामप्रद जीवन–यापन सप्त धातुओं को दूषित व विकृत कर कैंसर आदि रोग पैदा कर रहा है। कैंसर की अभी कोई प्रामाणिक औषधि खोजी नहीं जा सकी है जहां तक हो सके प्राकृतिक साधनों का पालन करें कृत्रिम भोज्य व प्रयोग के साधनों से दूर ही रहें शरीर व मन से शुद्ध व पवित्र रहे अग्निहोत्र करें पर्यावरण को शुद्ध रखें।

–चन्द्रलोक कालोनी, खुरजा

धर्म शहीद बाल हकीकत राय और बसन्त पंचमी

- पं. नन्दलाल निर्भय, पत्रकार

हमारा प्यारा आर्यवर्त (भारत वर्ष) ईश्वर भक्त, धर्मात्माओं, वीर शहीदों की पावन भूमि है। जिन वीरों ने देश धर्म मानवता की रक्षा में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था उन्हीं वीरों में से एक था धर्म शहीद बाल हकीकत राय। हकीकत राय का बलिदान मोहम्मद शाह रंगीला के शासनकाल में बसन्त पंचमी के दिन सन् 1734 ई. में हुआ था। उसकी याद में अभी-भी आर्य समाज तथा अन्य धार्मिक संस्थाएं बसन्त पंचमी के दिन शहीद दिवस धूमधाम से मनाती हैं।

हकीकत राय का जन्म सन् 1719 ई. में सियालकोट पूर्व पंजाब (पाकिस्तान) में हुआ था। उसके पिता का नाम भागमल महाजन तथा माता का नाम कौरा देवी था। बाल-विवाह की प्रथा के अनुसार अज्ञानता वश हकीकत राय का विवाह सन् 1732 ई. में बटाला की लक्ष्मी देवी के साथ कर दिया गया था। हकीकत राय के माता-पिता धार्मिक तथा ईश्वर भक्त थे इसलिए हकीकत राय भी धार्मिक वृत्ति का था।

हकीकत राय को सात वर्ष की आयु में सियालकोट के एक मदरसे में (पाठशाला) में प्रवेश दिलाया गया। वह कुशाग्र बुद्धि का बालक था। इसलिए मौलवी साहिब (अध्यापक) उससे बेहद प्यार करते थे। यह देखकर मुसलमान बच्चे हकीकत राय से भारी ईर्ष्या करते थे।

एकदिन मौलवी साहिब जरूरी काम से पाठशाला से बाहर चले गए तथा पाठशाला की देखभाल करना हकीकत राय को सौंप गए। मौलवी साहिब के चले जाने पर मुस्लिम बच्चों ने हुड़दंग मचाना शुरू कर दिया। हकीकत राय ने जब उन्हें ऐसा करने से रोका तो उन्होंने हकीकत राय को गालियां दी और बुरी तरह पीटा। मौलवी साहिब के आने पर हकीकत राय ने उन्हें सारा किस्सा सुना दिया। मौलवी साहिब ने हकीकत राय को पुचकार कर अपनी छाती से लगा लिया तथा मुसलमान बच्चों को दण्डित किया। मुसलमान बच्चों ने नाराज होकर हकीकत राय पर बीबी फातिमा को गालियाँ देने और मौलवी साहिब पर हकीकत राय की तरफदारी करने का आरोप लगाकर नगर के काजी सुलेमान से दोनों की शिकायत की। उन दिनों काजियों का बोलबाला था। इसलिए काजी सुलेमान ने हकीकत राय को मुसलमान बनाने का फतवा जारी कर दिया तथा घोषणा कर दी कि अगर हकीकत राय मुसलमान न बने तो उसका सिर कटवा दिया जाए। काजी ने फतवा जारी करके मामला नगर के हाकिम अमीर बेग को सौंप दिया। अमीर बेग एक शरीफ आदमी था उसने काजी सुलेमान को समझाया कि यह बच्चों का झगड़ा है, इसे ज्यादा बढ़ाना समझदारी नहीं है, किन्तु काजी नहीं माना। कुछ मुसलमान भी काजी के समर्थक बन गए इसलिए अमीर बेग ने सारा मामला लाहौर के नबाब सफेद खान की अदालत में भेज दिया। भागमल और कौरा देवी कुछ हिन्दुओं को साथ लेकर लाहौर पहुँचे और नवाब से हकीकत राय को माफ कर देने की प्रार्थना की।

लाहौर के नवाब ने सारे मामले को ध्यान से पढ़ा और सुना। दोनों पक्षों की बातें सुनकर तथा हकीकत राय की सुन्दरता, कम उम्र को देखकर हकीकत राय से खुश होकर कहा।

'बाल हकीकत राय! मान तू, बात एक बेटा मेरी।
मुसलमान बन, जान बचा ले, ज्यादा मत कर तू देरी।।
अपनी प्यारी सुन्दर बेटी, के संग निकाह करा दूंगा।
अपनी सारी दौलत का मैं, मालिक तुझे बना दूंगा।।
रख मेरा विश्वास लाड़ले, बैठा मौज उड़ाएगा।
इस सूबे का हर नर-नारी, तेरा हुक्म बजाएगा।।
सोच-समझ ले बेटा मन में, बात अगर ना मानेगा।
पछताएगा जीवन भर तू, यदि ज्यादा जिद ठानेगा।।'

नवाब की बातें सुनकर हकीकत राय ने गम्भीरता पूर्वक नवाब से पूछा :- ''अय नवाब साहिब, आप मुझे पहले एक बात बता दो यदि मैं मुसलमान बन जाऊँ तो मैं कभी मरूँगा तो नहीं? उन काजी और मौलवियों से भी पूछ लो कि ये और आप भी क्या सदा जीवित रहोगे?'' नवाब ने सिर नीचा करके कहा :- ''हकीकतराय संसार में जो जन्म लेता है वह अवश्य ही मरता है मैं भी मरूँगा, तू भी मरेगा और काजी, मौलवी भी जरूर मरेंगे। बेटा मैं पुत्रहीन हूँ अगर तू मेरी दुख्तर से निकाह कर लेगा तो मेरी सारी सम्पत्ति का मालिक बन जायेगा और जीवन भर मौज उड़ाएगा। अरे हकीकत राय, अब तू ठीक तरह सोच-समझकर उत्तर दे बेटा।''

नवाब का प्रस्ताव सुनकर हकीकत राय मुस्कारते हुए बोला -

'यह सृष्टि का है नियम अटल, जो इस दुनिया में आता है।
वह कर्मों का फल पाता है, ईश्वर न्यायकारी दाता है।।
जब आप मानते हो इसको, मृत्यु सबको खा जाती है।
वह घोरनर्क में जायेगा, जो नर पापी उत्पाती है।।
मैं राम, कृष्ण का वंशज हूँ, मैं वैदिक धर्म निभाऊँगा।
लालच के चक्कर में फंसकर, इस्लाम नहीं अपनाऊँगा।।'

हकीकत राय का उत्तर सुनकर नवाब भारी नाराज हो गया। और हकीकत राय पर रौब जमाते हुए बोलाः-

'तू कान खोलकर सुन लड़के, मैं अब जल्लाद बुलाऊँगा।
मैं तेग दुधारी के द्वारा, तेरे सिर को कटवाऊँगा।।
गुस्ताख बड़ा है तू लड़के, मैंने तुझको पहचान लिया।
तू नर्मी के ना लायक है, यह मेरे दिल ने मान लिया।।
तू बातूनी मत बन ज्यादा, ले बात मान सुख पायेगा।
छोटी-सी उम्र में तू पगले, वृथा ही मारा जायेगा।।

हकीकत राय ने जब नवाब की बातें सुनी तो गरजते हुए बोला :-

'तू अन्यायी सुन कान खोल, क्यों ज्यादा बात बनाता है।
मेरी तो मौत सहेली है, तू जिसका खौफ दिखाता है।।
अमर आत्मा, तन नश्वर है, वेद, शास्त्र दर्शाते हैं।
धर्मवीर, बलिदानी मानव, जग में पूजे जाते हैं।।
मैं साफ बताता हूँ पापी, तू घोर नर्क में जायेगा।
इस दुनिया का हर नर-नारी, अत्याचारी बतलाएगा।।
मेरा यह बलिदान, दुष्ट सुन, कभी न खाली जायेगा।
इस आर्यवर्त का हर मानव, वीरों की गाथा गायेगा।।
धर्मवीर, बलवानों की गाथा नर-नारी गाते हैं।
तेरे जैसे अत्याचारी, नफरत से देखे जाते हैं।।

हकीकत राय की निर्भीकता देखकर नवाब आपे से बाहर हो गया और उसने जल्लाद को बुलाकर हकीकत राय का सिर काटने का हुक्म दे दिया। हकीकत राय उस समय हंस रहा था। जल्लाद ने जब हकीकत राय की कम उम्र और सुन्दर सूरत को देखा तो उसका भी पत्थर दिल पिघल गया तथा तलवार उसके हाथ से गिर गई। यह देखकर हकीकत राय ने जल्लाद को समझाते हुए कहा :- 'अरे भाई जल्लाद! तू अपना फर्ज पूराकर और मुझे भी अपना धर्म निभाने दे। कहीं मेरी वजह से तेरे ऊपर भी कोई मुसीबत न आ जाए।' जल्लाद ने अपने आसुओं को पोंछकर तलवार को उठाकर हकीकत राय की गर्दन पर भरपूर वार किया जिससे हकीकत राय का सिर कटकर धरती पर लुढक गया। धन्य था धर्म शहीद बाल हकीकत राय जिसने अपना सिर कटवाकर भारत माता का मस्तक संसार में ऊँचा कर दिया। जब तक सूरज, चाँद, सितारे और पृथ्वी रहेगी यह संसार उस वीर शहीद की बलिदान गाथा गाता रहेगा।

सज्जनों! कुछ लोगों का विचार है कि बाल हकीकत राय का बलिदान मुगल बादशाह शाहजहाँ के शासनकाल में हुआ था तथा शाहजहां ने न्याय करते हुए नवाब और काजियों, मौलवियों को मृत्यु दण्ड दिया था किन्तु यह कथन सत्य से कोसों दूर एवं निराधार है। शाहजहां के पुत्र औरंगजेब की मृत्यु सन् 1707 ई. में हुई थी तथा हकीकत राय का बलिदान सन् 1734 ई. में हुआ था फिर उस समय शाहजहाँ कहाँ से आ गया? वास्तव में यह मुसलमान शासकों की चाल है। हमें विधर्मी लोगों के षड्यन्त्रों से सदैव सावधान रहना चाहिए। सच्चाई तो यह है कि उस समय मोहम्द शाह रंगीला का कुशासन था जो शराब पीकर औरतों के साथ दिल्ली के लालकिले में नाचता रहता था। ज्ञातव्य है कि ईरान के हमलावर नादिरशाह ने उसे शराब पिये हुए जनाने कपड़ों में गिरफ्तार करके उसके हरम की हजारों स्त्रियों को अपने सैनिकों में बाँट दिया था तथा तख्ते ताउस को लूटकर ईरान ले गया था।

आर्यों! आज भारत में छुआछूत, ऊँच-नीच, जाति-पाति का बोलबाला है। उग्रवाद, आतंकवाद बढ़ रहा है। भारत के नेतागण भ्रष्टाचार की कीचड़ में लिप्त है। विधर्मी लोग रात-दिन भारत की गरीब जनता को ईसाई, मुसलमान बनाने में लगे हुए हैं। धर्म के नाम पर पशु-पक्षियों की बलि दी जाती है। सीमा पर चीन और पाकिस्तान भारत पर आक्रमण करने को तैयार खड़े हैं। ऐसे घोर संकट में भारत को वीर शहीद हकीकत राय जैसे ईश्वर भक्त, धर्मात्मा, देश भक्त युवक-युवतियों की आवश्यकता है। परमात्मा से अन्त में यही प्रार्थना है :-

हे भगवान दया के सागर, भारत पर तुम कृपा कर दो।
भारत माँ की गोद दयामय, वीर सपूतों से अब भर दो।।
वीर हकीकत राय सरीखे, भारत में पैदा हो बच्चे।
धर्मवीर ईश्वर विश्वासी, आन-बान के हो जो सच्चे।।
जिससे ऋषियों का यह भारत, सारे जग का गुरु कहलाए।
भूखा-नंगा आर्यवर्त में, कोई कहीं नजर ना आए।।

- ग्राम व डाकघर- बहीन, तहसील, हथीन,
जिला-फरीदाबाद (हरियाणा)

आर्य समाज की निष्ठावान समाज सेविका बहन वेद कुमारी सेठी जी का अचानक निधन

आर्य समाज प्रताप नगर, दिल्ली की उपप्रधाना व समाजसेविका श्रीमती वेद कुमारी सेठी जी का गत 29 दिसम्बर, 2022 को अस्वस्थता के कारण अकस्मात निधन हो गया। वे अपने पीछे पति श्री केवल कृष्ण सेठी, पुत्र श्री अमित सेठी व बेटियाँ श्रीमती किरण चावला तथा सीमा सचदेवा सहित भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें दिल्ली के गणमान्य आर्य महानुभावों ने भाग लेकर अपनी संवेदना व्यक्त की।

आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने शोक संदेश के माध्यम से अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि श्री केवल कृष्ण सेठी जी आर्य समाज के कर्मठ साथियों में से एक हैं और बहन वेद कुमारी सेठी जी भी आर्य समाज तथा समाज सेवा के कार्यों में बढ़–चढ़कर भाग लेती थीं और वे अपने पति के कंधे से कंधा मिलाकर सदैव आर्य समाज के कार्यों में लगी रहती थीं। उनका अचानक निधन आर्य समाज तथा राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा परिवारजनों को इस असहनीय कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

संवेदना व्यक्त करने वालों में सर्वश्री रविकान्त मंत्री, आर्य समाज दीवान हाल ने भी शोक व्यक्त किया। श्री समय सिंह, ए.सी.पी. इंस्पेक्टर श्री यशविंदर व अन्य आर्यनेताओं तथा गणमान्य साथियों ने इस अवसर पर अपना शोक संदेश व्यक्त किया।

उनकी स्मृति में आयोजित शोक सभा में पूर्व सेशन जज माननीय बी.एस. चुंबक दिल्ली सरकार के पूर्व अधिकारी श्री विजेंद्र राजपूत, श्री उदित अग्रवाल, उपप्रधान कांग्रेस कमेटी (दिल्ली) श्री राजेश जैन (पूर्व विधायक), ब्लॉक कांग्रेस के मंडल अध्यक्ष श्री जुगल किशोर शर्मा, श्री एम.के. द्विवेदी (प्रसिद्ध एडवोकेट) सदर मंडल के प्रधान श्री उदित शर्मा, पंडित विश्वनाथ शर्मा, सरदार राजेंद्र सिंह अहलूवालिया, भाजपा नेता श्री राजेश यादव, श्री विजय देव कौशिक, श्री कमल शर्मा ने भी समाज सेविका वेद कुमारी सेठी जी के निधन पर गहरा दुख जताया।

– केवल कृष्ण सेठी, मंत्री, आर्य समाज मंदिर, प्रतापनगर, दिल्ली मो.

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 5 का शेष

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के अन्तरंग सदस्यों, प्रमुख कार्यकर्ताओं तथा आर्य वीरदल के पदाधिकारियों की आवश्यक बैठक 22 जनवरी, 2023 को हुई सम्पन्न

आर्य वीर दल राजस्थान के अधिष्ठाता श्री भंवर लाल आर्य ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि सम्मेलन में हजारों आर्य वीरों की उपस्थिति विशेष आकर्षण का विषय रहेगी। उन्होंने आर्य वीरदल की सभी इकाईयों को निर्देश दिया कि वे अभी से सम्मेलन की तैयारी में जुट जायें और अपने गणवेश में सम्मेलन में पधारें।

आर्य वीरदल जोधपुर के अध्यक्ष श्री हरि सिंह आर्य ने इस विशाल सम्मेलन की व्यवस्था आने वाले लोगों के लिए भोजन आवास आदि के प्रबन्ध का दायित्व आर्य वीर दल जोधुपर पूरी निष्ठा के साथ निभायेगा। जोधपुर की सभी आर्य समाजों तथा आर्य वीर दल की इकाईयों के सहयोग से हम लोग सम्मेलन को सफल बनाने के लिए कटिबद्ध हैं। राजस्थान के महामंत्री श्री जितेंद्र सिंह ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

बैठक में स्वामी आर्यवेश जी की अपील पर सम्मेलन के आर्थिक सहयोग की घोषणाएं भी की गई। यह सम्मेलन 26, 27 व 28 मई, 2023 को होगा। सभी

आर्य समाज फोर्ट का 64वाँ वार्षिकोत्सव एवं आर्य वीर दल महावीर शाखा की प्रतियोगिताएँ समारोह पूर्वक सम्पन्न

जोधपुर शहर की लोकप्रिय विधायक बहन मनीषा पंवार ने की अध्यक्षता

स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी रहे मुख्य वक्ता

आर्य समाज फोर्ट का 64वां वार्षिकोत्सव एवं आर्य वीर दल महावीर शाखा की 7 दिन से चल रही प्रतियोगिताएँ 14 जनवरी, 2023 को उत्साह एवं उल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुई। इस पूरे आयोजन की अध्यक्षता जोधपुर शहर की लोकप्रिय विधायक बहन मनीषा पंवर ने की। इस अवसर पर आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, राजस्थान सभा के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट जी व उपप्रधान श्री नारायण सिंह आर्य ने अपने विचार प्रस्तुत किये। इस कार्यक्रम का संयोजन आर्य वीरदल जोधपुर के संचालन श्री उम्मेद सिंह आर्य ने किया।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में आर्य समाज के भावी कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि युवाओं को अधिक से अधिक संख्या में आर्य वीर दल की शाखाओं में सम्मिलित करने का प्रयास करने चाहिए। युवा ही भविष्य के कर्णधार होते हैं। उन्होंने स्व. श्री राम सिंह आर्य और स्व. मदन सिंह आर्य को स्मरण करते हुए आर्य वीरों को उनके जीवन से प्रेरणा लेने के लिए उत्साहित किया।

स्वामी आदित्यवेश जी ने देश की आजादी में महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायियों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा से अनेक क्रांतिकारियों ने देश की आजादी के लिए अपना बलिदान दिया और देश को आजाद कराया। स्वामी दयानन्द जी की प्रेरणा से स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी, श्यामजी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द जी, लाला लाजपत राय, अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल, शहीदे आजम भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद सरीखे महापुरुषों ने देश की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति देकर इतिहास रचा। आज नौजवानों को इन महापुरुषों से देशभक्ति की प्रेरणा लेनी चाहिए।

श्री बिरजानन्द जी ने महर्षि दयानन्द जी का नारी जाति के उत्थान में ऐतिहासिक योगदान बताया। श्री नारायण सिंह आर्य ने ओजस्वी कविता प्रस्तुत की।

अध्यक्षीय उद्बोधन में बहन मनीषा पंवार ने जहां उपस्थित जनसमूह का धन्यवाद ज्ञापित किया, वहीं उन्होंने कहा कि मुझे तो घुट्टी में ही आर्य समाज के संस्कार मिले हैं। मेरे पिता जी स्व. श्री रामसिंह आर्य ने हमें प्रारम्भ से ही आर्य समाज के महापुरुषों के जीवन के संस्मरण सुनाकर प्रेरित किया है। मैं यह समझती हूं कि आर्य वीर दल में आने वाले बच्चों को वे संस्कार दिये जाते हैं जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास होता है और जीवन की नींव मजबूत बनती है। उन्होंने आर्य समाज की शक्ति को संगठित करने पर बल दिया और समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों यथा जातिवाद, नशाखोरी, साम्प्रदायिकता व महिला उत्पीड़न जैसे मुद्दे पर कार्य करने की सलाह दी। मनीषा जी ने स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी व श्री बिरजानन्द जी को अपना अमूल्य समय देने के लिए धन्यवाद किया।

इससे पूर्व प्रातः 10 बजे आर्य वीरांगना दल, जोधपुर के तत्वावधान में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी आर्यवेश जी का सारगर्भित व्याख्यान हुआ। विद्यालय की प्रबन्ध समिति की ओर से स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी का शॉल और स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन आर्य वीरांगना दल की मंत्री हिमांशी आर्या तथा अध्यक्षता श्रीमती लीला भाटी ने की। आर्य वीरांगना दल के प्रयत्न से यह कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।